अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) जिन जीवों का शरीर प्रायः तिरछा-टेढ़ा-मेढ़ा होता है, उन जीवों की गति होती है-
(क) नरक गति (ख) तिर्यंच गति
(ग) मनुष्य गति (घ) देव गति (ख)

(ii) 'चउरिन्द्रिय' जाति का उदाहरण है-
(क) कृमि (ख) इली
(ग) भंवरा (घ) पक्षी (ग)

(iii) परिणमन करने की शक्ति को कहते हैं-
(क) गति (ख) इन्द्रिय
(ग) पर्याप्ति (घ)विकार (ग)

(iv) मन के कितने योग होते हैं-
(क) 4 (ख) 5
(ग) 8 (घ) 7 (क)

(v) ज्ञान का भेद नहीं हैं-
(क) मति ज्ञान (ख) श्रुत ज्ञान
(ग) अवधि ज्ञान (घ) विभंग ज्ञान (घ)

(vi) घाती कर्म नही हैं-
(क) ज्ञानावरणीय (ख) दर्शनावरणीय
(ग) आयु (घ) अन्तराय (ग)

(vii) पाँच इन्द्रियों कितने विकार हैं-
(क) 23 (ख) 240
(ग) 48 (घ) 560 (ख)

(viii) मिथ्यात्व के भेद हैं-
(क) 10 (ख) 08
(ग) 16 (घ) 108 (क)

(ix) जिन कारणों से आत्मा पर आने वाले कर्म-पुद्गलों को रोका जा सके, उसे कहते हैं-
(क) आश्रव (ख) संवर
(ग) मोक्ष (घ) निर्जरा (ख)

(x) श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों को कहते हैं-
(क) लक्षण (ख) शुद्धि
(ग) दूषण (घ) भूषण (ग)

(xi) प्रभावना के भेद हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 7 (घ) 8 (घ)

(xii) धर्म रूपी वृक्ष का मूल है-
(क) दान (ख) अनुकंपा
(ग) समकित (घ) यतना (ग)

(xiii) पच्चक्खाण कितने प्रकार के होते हैं-
(क) 2 (ख) 5
(ग) 10 (घ) 4 (क)

(xiv) 'क्षुधा वेदनीय कर्म के उदय से अभिलाषा होना' कौनसी संज्ञा है-
(क) भय संज्ञा (ख) आहार संज्ञा
(ग) क्रोध संज्ञा (घ) लोभ संज्ञा (ख)

(xv) विज्ञान का क्या फल है-
(क) ज्ञान (ख) संयम
(ग) पच्चक्खाण (घ) तप (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) तेजो, पद्म और शुक्ल प्रशस्त लेश्या हैं। (हाँ)

(ii) षट्द्रव्यों के उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य रूप त्रिपदी का चिन्तन करना 'धर्मध्यान' है। (हाँ)

(iii) प्रदेश रहित होने से काल अस्तिकाय है। (नहीं)

(iv) आठ स्पर्श के 184 भेद हैं। (हाँ)

(v) मोक्ष की तीव्र इच्छा 'निर्वेद' है। (नहीं)

(vi) सम्यग्दृष्टि को वन्दना करे, मिथ्यादृष्टि को नहीं । (हाँ)

(vii) कठिन तपस्या करके धर्म की उन्नति करने वाला 'तपस्वी प्रभावक' कहलाता है। (हाँ)

(viii) भव्य जीव कर्मों का क्षय करके नरक में जाता है। (नहीं)

(ix) अद्धातप के 10 भेद हैं। (हाँ)

(x) द्रव्य की अपेक्षा जीव शाश्वत है और पर्याय की अपेक्षा जीव अशाश्वत है। (हाँ)

(xi) परिग्रह संज्ञा का एक कारण शरीर की पुष्टता है। (नहीं)

(xii) वेदनीय कर्म के उदय से मान संज्ञा होती है। (नहीं)

(xiii) 'सवणे-णाणे' का उल्लेख श्री भगवती सूत्र के दूसरे शतक में किया गया है। (हाँ)

(xiv) अक्रिया का फल 'वोदाण' है। (नहीं)

(xv) पच्चक्खाण का फल 'संयम' है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(i)	प्राण	(क) उपयोग गुण	10
(ii)	योग	(ख) संवेग	15
(iii)	जीवास्तिकाय	(ग) 3	उपयोग गुण
(iv)	हृदय की कोमल वृत्ति	(घ) 15	विनय
(v)	मोक्ष की तीव्र इच्छा	(च) वर्तन गुण	संवेग
(vi)	शुद्धि	(छ) 10	3
(vii)	काल द्रव्य	(ज) विनय	वर्तन गुण
(viii)	समकित, धर्म रूपी वृक्ष का मूल है	(झ) शाश्वत	भावना
(ix)	आगार सहित तप करे	(य) भावना	सागार
(x)	द्रव्य की अपेक्षा जीव	(र) 10	शाश्वत
(xi)	पर्युपासना का फल	(ल) आहार संज्ञा	श्रवण
(xii)	मुष्टि आदि संकेत पूर्वक तप करें	(व) सागार	संकेय
(xiii)	वेदनीय कर्म के उदय से	(क्ष) सिद्धि	आहार संज्ञा
(xiv)	संज्ञा के प्रकार	(त्र) संकेय	10
(xv)	अक्रिया का फल	(ज्ञ) श्रवण	सिद्धि

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मैं शुभाशुभ कर्मों का फल भोगने वाला स्थान कहलाता हूँ।	दण्डक
(ii)	मैं ऐसी लेश्या हूँ, जिसमें केवलज्ञान भी प्रकट हो सकता है।	शुक्ल
(iii)	मैं किसी भी कार्य में स्थिर अध्यवसाय होने पर कहलाता हूँ।	ध्यान
(iv)	मैं गुण एवं पर्यायों के समूह से बनता हूँ।	द्रव्य
(v)	मैं जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती हैं, उससे जाना जाता हूँ।	भूषण
(vi)	मैं कठिन तपस्या करके धर्म की उन्नति करता हूँ।	तपस्वी प्रभावक
(vii)	मैं मोक्ष-प्राप्ति का प्रथम उपाय हूँ।	सम्यक् ज्ञान
(viii)	हमें व्रत अंगीकार करते समय छूट के रूप में रखा जाता है।	आगार
(ix)	मैं ऐसा सूत्र हूँ, जिसके सातवें शतक में सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण का वर्णन किया गया है।	भगवती सूत्र
(x)	मैं अद्धातप का पहला भेद हूँ।	नवकारसी
(xi)	मैं पर्याय की अपेक्षा होता हूँ।	अशाश्वत
(xii)	मैं संज्ञा का एक भेद हूँ, जिसके उदय से जीव छल-कपट आदि की चेष्टा करता है।	माया-संज्ञा
(xiii)	मैं एक ऐसी संज्ञा हूँ, जो देवगति से आये जीव में अधिक पायी जाती हूँ।	लोभ, परिग्रह संज्ञा
(xiv)	मैं विज्ञान का फल हूँ।	पच्चक्खाण
(xv)	मैं अनाश्रव' का फल हूँ।	तप

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) ऊनोदरी तप किसे कहते हैं ?

उ. भोजन की अधिक रुचि होने पर भी कम भोजन करना।

(ii) पुद्गलास्तिकाय का गुण एवं दृष्टांत लिखिए।

उ. गुण-पूरण, गलन, विध्वंसन गुण। दृष्टांत-आकाश में बादलों का मिलना व बिखरना।

(iii) 'वितिगिच्छा' का अर्थ लिखिए।

उ. धार्मिक क्रिया के विषय में फल के प्रति संदेह करना व गुणियों के मलिन वेष को देखकर घृणा करना।

(iv) 'स्थानक' किसे कहते हैं ?

उ. धर्म की उत्पत्ति व धर्म में स्थिर होने में सहायक होने वाले स्थान को 'स्थानक' कहते हैं।

(v) 'अणागयं' का अर्थ है ?

उ. जो तप आगामी काल में करना है, वह पहले कर लें।

(vi) चार शिक्षाव्रत के नाम लिखिए।

उ. 1. सामायिक 2. देशावकाशिक 3. पौषधोपवास 4. अतिथि-संविभाग व्रत

(vii) तिर्यंच गति से आये जीवों में कौनसी संज्ञा अधिक पायी जाती है ?

उ. माया और आहार संज्ञा

(viii) 'संयम' का फल क्या है ?

उ. अनाश्रव

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) पर्याप्ति के 6 भेद क्रम से लिखिए।

उ. 1. आहार पर्याप्ति 2. शरीर 3. इन्द्रिय 4. श्वासोच्छ्वास 5. भाषा 6. मनः पर्याप्ति।

(ii) वैक्रिय शरीर के दो भेदों को समझाइए।

उ. वैक्रिय शरीर दो प्रकार का होता है-1. भव प्रत्यय 2. लब्धि प्रत्यय। पहला देवों और नारकों में जन्म के साथ ही होता है। दूसरा मनुष्य और तिर्यंचों को जप-तप आदि विशिष्ट साधना द्वारा लब्धि से प्राप्त होता है।

(iii) अवधि और मनःपर्यव ज्ञान के कोई 2 अन्तर लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो मान्य-

1. मनः पर्यवज्ञान अवधिज्ञान की अपेक्षा अपने विषय को बहुत गहराई से जानता है, अतः वह अवधिज्ञान से विशुद्धत्तर है।

2.अवधिज्ञान का क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर सम्पूर्ण लोक प्रमाण है, जबकि मनः पर्यवज्ञान का क्षेत्र मानुषोत्तर पर्वत तक ही है।

3. अवधिज्ञान के स्वामी चारों गति के जीव हो सकते हैं, जबकि मनःपर्यवज्ञान के स्वामी केवल संयमी मनुष्य ही होते हैं।

4. अवधिज्ञान का विषय कतिपय पर्याय सहित रूपी द्रव्य है, जबकि मनःपर्यवज्ञान का विषय अवधिज्ञान का अनन्तवाँ भाग अर्थात् मनोद्रव्य मात्र है।

(iv) घ्राणेन्द्रिय के विषय एवं विकार लिखिए।

उ. घ्राणेन्द्रिय के 2 विषय- 1. सुरभिगंध 2. दुरभिगंध।
विकार- 2 सचित्त, 2 अचित्त, 2 मिश्र। इन 6 पर राग और 6 पर द्वेष। इस प्रकार 12 विकार।

(v) अंक 13 के भंग लिखिए।

उ. अंक 13 के भंग तीन। एक करण और तीन योग से कहना-
करुँ नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।
करुाऊँ नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।
अनुमोदूँ नहीं- मनसा, वयसा, कायसा।

(vi) शुद्धि के तीन भेद अर्थ सहित लिखिए।

उ. 1. मन शुद्धि- मन से वीतराग देव व सुगुरु का स्मरण,ध्यान और गुणगान करें, अन्य सरागी देव का नहीं करें।

2. वचन शुद्धि- वाणी से वीतराग देव व सुगुरु का गुणगान करें, अन्य सरागी देव का नहीं करें।

3. काय शुद्धि- काय से वीतराग देव व सुगुरु को वंदना-नमस्कार करें, अन्य सरागी देव को नहीं करें।

(vii) नैमित्तिक प्रभावक एवं कवि प्रभावक किसे कहते हैं ?

उ. नैमित्तिक प्रभावक- निमित्त ज्ञान से भूत, भविष्य और वर्तमान काल की बात जानने वाला होकर धर्म को चमकाएँ।

कवि प्रभावक- शास्त्र के अनुसार कविता रचकर धर्म की उन्नति करें।

(viii) सुपच्चक्खाणी जीव के अंतिम तीन लक्षण लिखिए।

उ. 1. संवृत (संवर सहित) है, 2. छह काया का रक्षक है, 3. एकान्त पण्डित-ज्ञानी है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) नारकी के जीवों को क्षेत्र वेदना के अन्तर्गत कितने प्रकार की वेदना भोगनी पड़ती है-
(क) 8 (ख) 10
(ग) 6 (घ) 3 (ख)

(b) ग्रहण किये गए विषयों को अच्छा-बुरा मानकर उन पर राग-द्वेष करना कहलाता है-
(क) विकार (ख) विषय
(ग) सचित्त (घ) अचित्त (क)

(c) सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र में से सम्यक् तप किसमें शामिल किया गया है-
(क) सम्यग्दर्शन में (ख)सम्यग्ज्ञान में
(ग) सम्यग्चारित्र में (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(d) अज्ञान पूर्वक तप करने से होने वाली निर्जरा है-
(क) सकाम निर्जरा (ख) अकाम निर्जरा
(ग) सकाम अकाम निर्जरा (घ) अकाम सकाम निर्जरा (ख)

(e) शास्त्र की वाचना, पृच्छना आदि करना कहलाता है-
(क) व्युत्सर्ग (ख) ध्यान
(ग) वैयावृत्य (घ) स्वाध्याय (घ)

(f) जिस लेश्या का वर्ण अलसी के फूल के समान होता है, वह है-
(क) नील लेश्या (ख) कृष्ण लेश्या
(ग) कापोत लेश्या (घ) पद्म लेश्या (ग)

(g) अधर्मास्तिकाय का गुण है-
(क) स्थिर गुण (ख) चलन गुण
(ग) अवगाहन गुण (घ) वर्तन गुण (क)

(h) 'गुरु निग्रह' किसका भेद हैं-
(क) यतना (ख) स्थानक
(ग) प्रभावना (घ) आगार (घ)

(i) दुखी जीवों के दु:खों को मिटाने की इच्छा कहलाती है-
(क) निर्वेद (ख) अनुकम्पा
(ग) संवेग (घ) आस्था (ख)

(j) 'जीव शुभाशुभ कर्मों का कर्त्ता है', यह किसका भेद है-
(क) स्थानक (ख) भावना
(ग) यतना (घ) प्रभावना (क)

(k) उत्तर गुण पच्चक्खाण के भेद हैं-
(क) 5 (ख) 7
(ग) 2 (घ) 3 (ग)

(l) मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय को छोड़कर 22 दण्डक में भंग पाया जाता है-
(क) पच्चक्खाणी (ख) अपच्चक्खाणी
(ग) देशमूल गुण पच्चक्खाणी (घ) सर्वमूल गुण पच्चक्खाणी (ख)

(m) 'शरीर की पुष्टता से' कौनसी संज्ञा की उत्पत्ति होती है-
(क) आहार संज्ञा (ख) परिग्रह संज्ञा
(ग) मैथुन संज्ञा (घ) भय संज्ञा (ग)

(n) 'बैठे-बैठे पैर हिलाना' संज्ञा है-
(क) लोक संज्ञा (ख) ओघ संज्ञा
(ग) माया संज्ञा (घ)लोभ संज्ञा (ख)

(o) संयम का फल है-
(क) सिद्धि (ख) तप
(ग) अनास्रव (घ) वोदाण (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) 'कसारी' चउरिन्द्रिय जाति का जीव है। (हाँ)
(b) भव प्रत्यय औदारिक शरीर का भेद हैं। (नहीं)
(c) अन्तराय कर्म के क्षय से क्षायिक समकित प्रकट होती है। (नहीं)
(d) जो अनादि काल से मिथ्यात्वी हैं, किन्तु मोक्ष प्राप्ति की जो योग्यता रखते हैं, वे भवी कहलाते हैं। (हाँ)
(e) जिन कारणों से आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है, वह संवर है। (नहीं)
(f) पदार्थ के यथार्थ अयथार्थ की स्थिति मिथ्यादृष्टि है। (नहीं)
(g) जिन धर्म में स्थिर करें उन्हें भूषण कहते हैं। (हाँ)
(h) मिथ्यादृष्टि से विशेष भाषण न करें और सम्यग्दृष्टि से बार-बार चर्चा अवश्य करें, वह यतना का आलाप भेद है। (नहीं)
(i) शास्त्र के अनुसार कविता रचकर धर्म की उन्नति करें, यह प्रभावना का भेद है। (हाँ)
(j) 'समकित, धर्मरूपी भोजन का थाल है।' भावना का भेद है। (हाँ)
(k) 'अणगारं' मूलगुण पच्चक्खाण के भेद है। (नहीं)
(l) जो तप आगामी काल में करना है, वह पहले कर लेवें, यह सर्व उत्तर गुण पच्चक्खाण का भेद है। (हाँ)
(m) द्रव्य की अपेक्षा जीव शाश्वत है, पर्याय की अपेक्षा अशाश्वत है। (हाँ)
(n) नारकी से आये हुए जीव में माया और आहार संज्ञा अधिक पायी जाती है। (नहीं)
(o) अक्रिया का फल 'सिद्धि ' है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	विभंगज्ञान	(क) आहार संज्ञा	अवधि अज्ञान
(b)	पटसन के फूल के समान पीला	(ख) वोदाण	पद्मलेश्या
(c)	लोकान्तिक	(ग) निरवसेसं	9
(d)	अप्रदेशी	(घ) यतना	काल
(e)	आत्म स्वरूप का चिंतन करना	(च) दूषण	धर्मध्यान
(f)	निर्जरा के भेद	(छ) अद्धा तप	2
(g)	लक्षण के भेद	(ज) 9	5
(h)	वन्दना	(झ) धर्मध्यान	यतना
(i)	बलाभियोग	(य)अवधि अज्ञान	आगार
(j)	वितिगिच्छा	(र) पद्मलेश्या	दूषण
(k)	आयम्बिल	(ल) काल	अद्धा तप
(l)	सर्वउत्तरगुण पच्चक्खाण के भेद	(व) 2	10
(m)	चारों प्रकार के आहार का त्याग	(क्ष) 5	निरवसेसं
(n)	वेदनीय कर्म के उदय से संज्ञा	(त्र) आगार	आहार संज्ञा
(o)	तप का फल	(ज्ञ) 10	वोदाण

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	मेरा विषय 'तीखा' है।	रसनेन्द्रिय
(b)	'विध्वंसन' मेरा गुण है।	पुद्गलास्तिकाय
(c)	मेरे कारण शरीर में विद्यमान उष्णता व जठराग्नि पैदा होती है।	तैजस शरीर
(d)	मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें उपशम श्रेणी वाला जीव ही आता है, क्षपक श्रेणी वाला नहीं।	उपशांत मोहनीय (11वाँ)
(e)	मैं आत्मा का एक ऐसा भेद हूँ, जो सभी संसारी जीवों में पायी जाती है, किन्तु सिद्धों में नहीं।	वीर्य आत्मा
(f)	मैं ऐसा द्रव्य हूँ, जो अस्तिकाय नहीं हूँ।	काल
(g)	मैं संसार से उदासीन रूप वैराग्य भाव होने पर होता हूँ।	निर्वेद
(h)	मैं अनेक विद्याओं का जानकार होकर धर्म की उन्नति करता हूँ।	विद्यावान प्रभावक
(i)	मैं विविध विचारों से समकित में दृढ होने रूप हूँ।	भावना
(j)	मैं धर्म कथा सुनाकर धर्म को दिपाता हूँ।	धर्मकथा प्रभावक
(k)	मैं ऐसे सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान का भेद हूँ जो पूर्व तप की समाप्ति और उत्तर तप का प्रांरभ हूँ।	कोडी सहियं
(l)	मेरे दस भेदों में एक भेद अभिग्रह है।	अद्धा तप
(m)	मेरे कर्म के उदय से जीव में मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है।	वेद मोहनीय
(n)	मेरा फल पच्चक्खाण है।	विज्ञान
(o)	मैं अक्रिया का फल हूँ।	सिद्धि

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) वह कौनसी लेश्या है, जिसकी गंध अत्यधिक अशुभ होती है ?
कृष्ण लेश्या

(b) अनुत्तर वैमानिक देवलोकों के नाम लिखिए।
विजय, वैजयन्त, जयंत, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध

(c) सामायिक चारित्र किसे कहते हैं ?
1. सामायिक चारित्र- सामायिक शब्द सम+आय+इक से बना है। जिसका अर्थ है-राग-द्वेष रहित आय अर्थात ज्ञान, दर्शन, चारित्र का आना और मोक्षरूप फल का प्राप्त होना। 2. आत्म स्वभाव में, समभाव में स्थिर होना सामायिक है। 3.राग-द्वेष रहित आत्मा के क्रियानुष्ठान को सामायिक चारित्र कहते हैं। 4. सर्व-सावद्य व्यापार का त्याग करना एवं निरवद्य व्यापार का सेवन करना सामायिक चारित्र है। संयम ग्रहण करने पर साधक को सर्वप्रथम समायिक चारित्र ही ग्रहण कराया जाता है। (इन चारों में से कोई एक)

(d) प्रवचन प्रभावक का अर्थ लिखिए।
प्रवचन प्रभावक-जिस काल में जितने सूत्र उपलब्ध हों, उनका ज्ञान बढ़ाकर धर्म को (दीपावे) चमकावें।

(e) स्थानक किसे कहते हैं ?
धर्म की उत्पत्ति व धर्म के स्थिर होने में सहायक होने वाले स्थान को 'स्थानक' कहते हैं।

(f) सर्वमूल गुण पच्चक्खाण के भेदों के नाम लिखिए।
सर्व मूल पच्चक्खाण के पाँच भेद हैं- सर्वथा प्रकार से हिंसा, झूठ, चौरी, मैथुन और परिग्रह का त्याग करना अर्थात् पाँचों महाव्रतों का पालन करना।

(g) देवगति से आये हुए जीवों में कौनसी संज्ञा अधिक पायी जाती है ?
लोभ और परिग्रह संज्ञा

(h) ज्ञान का फल क्या है।

:: ::

विज्ञान अर्थात् हेयोपादेय का विशेष ज्ञान

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) वाणव्यन्तर देवों के सोलह भेदों के नाम लिखिए।

16 वाणव्यन्तर- पिशाचादि (पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व) आणपन्ने आदि आठ (आणपन्ने, पाणपन्ने, इसिवाई, भूयवाई, कंदे, महाकंदे, कुह्मण्डे, पयंगदेव)

(b) मनःपर्यवज्ञान को परिभाषित कीजिए।

इन्द्रिय व मन की सहायता के बिना सीधे आत्मा से संज्ञी जीवों के मनोगत भावों को जानना मनपर्यव ज्ञान कहलाता है।

(c) श्रोतेन्द्रिय के 3 विषय व 12 विकार के नाम लिखिए।

3 विषय-जीव शब्द, अजीव शब्द, मिश्र शब्द। विकार- 3 शुभ, 3 अशुभ, इन 6 पर राग और 6 पर द्वेष, इस प्रकार 12 विकार।

(d) लक्षण की परिभाषा व उसके भेदों के नाम लिखिए।

लक्षण-श्रद्धा होने पर जो गुण आवश्यक रूप से पाये जाने चाहिए, वे 'लक्षण' कहलाते हैं।
भेद-1. सम, 2. संवेग, 3. निर्वेद, 4. अनुकम्पा, 5. आस्था

(e) भूषण के प्रथम दो भेद लिखिए।

1.जिनशासन में निपुण व कुशल होवें।
2. जिनशासन की प्रभावना करें अर्थात् जिनशासन के गुणों को दीपावें व सुसाधुओं की सेवा-भक्ति करें।

(f) सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाण के 10 भेदों में से अंतिम तीन भेद लिखिए।

8. णिरवसेसं- चारों प्रकार के आहार का त्याग करें, संथारा करें।
9. संकेयं- मुष्टि आदि संकेतपूर्वक तप करें।
10. अद्धा- काल का परिमाण कर तप करें

(g) आहार संज्ञा की उत्पत्ति के चार कारण लिखिए।

1.पेट के खाली होने से, 2. क्षुधा-वेदनीय कर्म के उदय से, 3. आहार का चिन्तन करने से, 4. आहार के दृश्य देखने से।

(h) सवणे णाणे प्रश्नोत्तर के आधार पर श्रवण व वोदाण का फल लिखिए।

श्रवण का फल- ज्ञान (जानपना)
वोदाण का फल- अक्रिया (क्रिया रहित होना)

:: ::

कक्षा : प्रथम – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) जहाँ जीव अशुभ कर्मों का फल अधिक भोगता है, उसे कहते हैं-
(क) नरक गति (ख) तिर्यंच गति
(ग) मनुष्य गति (घ) देव गति (क)

(b) चतुर्थ पर्याप्ति का नाम है-
(क) आहार (ख) भाषा
(ग) श्वासोच्छवास (घ) शरीर (ग)

(c) यह शरीर सभी संसारी जीवों में पाया जाता है-
(क) आहारक (ख) वैक्रिय
(ग) औदारिक (घ) तैजस (घ)

(d) मिथ्यात्वी का प्रकार नहीं है-
(क) अभवी (ख) भवी
(ग) सम्यक्त्वी (घ) पडिवाई (ग)

(e) रसनेन्द्रिय के विषय होते हैं-
(क) 05 (ख) 02
(ग) 12 (घ) 60 (क)

(f) आभ्यन्तर तप का भेद है -
(क) रसपरित्याग (ख) ऊनोदरी
(ग) विनय (घ) प्रतिसंलीनता (ग)

(g) विनय के भेद होते हैं-
(क) 03 (ख) 08
(ग) 10 (घ) 05 (ग)

(h) जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती हो, उसे कहते हैं-
(क) दूषण (ख) भूषण
(ग) लिंग (घ) प्रभावना (ख)

(i) ''संलाप'' किसका भेद है-
(क) भावना (ख) यतना
(ग) आगार (घ) स्थानक (ख)

(j) मोक्ष की तीव्र इच्छा कहलाती है-
(क) सम (ख) संवेग
(ग) निर्वेद (घ) आस्था (ख)

(k) देश मूलगुण पच्चक्खाण के भेद हैं-
(क) 02 (ख) 05
(ग) 10 (घ) 04 (ख)

(l) आयम्बिल किस तप का भेद है-
(क) संकेय (ख) सागारं
(ग) अद्धा (घ) णिरवसेसं (ग)

(m) द्रव्य की अपेक्षा जीव है-
(क) शाश्वत (ख) अशाश्वत
(ग) अनित्य (घ) परिवर्तनशील (क)

(n) पेट खाली होने से कौनसी संज्ञा की उत्पत्ति होती है-
(क) भय संज्ञा (ख) आहार संज्ञा
(ग) मैथुन संज्ञा (घ) परिग्रह संज्ञा (ख)

(o) अक्रिया का फल है -
(क) तप (ख) संयम
(ग) अनाश्रव (घ) सिद्धि (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) कुंथुआ तेइन्द्रिय जाति का भेद है। (हाँ)
(b) जीवन जीने की शक्ति विशेष को 'प्राण' कहते हैं। (हाँ)
(c) बाल तप करने से मनुष्य गति का बंध होता है। (नहीं)
(d) 'मिश्र मोहनीय' चारित्र मोहनीय की प्रकृति है। (नहीं)
(e) परमाधार्मिक देवों के 15 भेद होते हैं। (हाँ)
(f) साधुजी का पाँचवाँ महाव्रत 'ब्रह्मचर्य' है। (नहीं)
(g) गुणियों के मलिन वेश देखकर घृणा करना वितिगिच्छा है। (हाँ)
(h) प्रभावना के पाँच भेद होते हैं। (नहीं)
(i) जीव शाश्वत अर्थात् उत्पत्ति विनाश रहित है। (हाँ)
(j) भव्य जीव कर्मों को क्षय करके नरक में जाता है। (नहीं)
(k) सर्व मूलगुण पच्चक्खाण के 5 भेद हैं। (हाँ)
(l) 'अतिथि-संविभाग व्रत' शिक्षा व्रत का एक भेद है। (हाँ)
(m) समुच्चय जीवों में तीनों भंग पाये जाते हैं। (हाँ)
(n) देवगति से आये हुए जीव में लोभ एवं परिग्रह संज्ञा अधिक पाई जाती है। (हाँ)
(o) पच्चक्खाण का फल वोदाण होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	आहारक शरीर	(क) अघाती कर्म	चौदह पूर्वधारी
(b)	विभंग ज्ञान	(ख) रसनेन्द्रिय	अज्ञान
(c)	गोत्र कर्म	(ग) 10	अघाती कर्म
(d)	कषैला	(घ) आगार	रसनेन्द्रिय
(e)	अन्तराय कर्म	(च) श्री भगवती सूत्र	घाती कर्म
(f)	अभ्याख्यान	(छ) 7	पाप
(g)	विनय	(ज) श्री पन्नवणा सूत्र	10
(h)	स्थानक	(झ) विज्ञान	6
(i)	आस्था	(य) अज्ञान	लक्षण
(j)	गुरु-निग्रह	(र) 24 दण्डक	आगार
(k)	सुपच्चक्खाण दुपच्चक्खाण	(ल) घाती कर्म	भगवती सूत्र
(l)	देश उत्तरगुण पच्चक्खाण के भेद	(व) 6	7
(m)	संज्ञा का थोकड़ा	(क्ष) पाप	श्री पन्नवणा सूत्र
(n)	दस संज्ञाएँ	(त्र) लक्षण	24 दण्डक
(o)	ज्ञान का फल	(ज्ञ) चौदह पूर्वधारी	विज्ञान

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) मैं आने वाले कर्मों को आत्मा के साथ चिपका देती हूँ। लेश्या
(b) मेरे क्षय से जीव में अनन्त आत्म सामर्थ्य गुण प्रकट होता है। अन्तराय कर्म
(c) मुझमें मोहनीय कर्म में मात्र सूक्ष्म संज्वलन लोभ का उदय शेष रह जाता है। सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान
(d) मैं एक ऐसा द्रव्य हूँ, जो सभी द्रव्यों को आकाश देता हूँ। आकाशास्तिकाय

(e) काल द्रव्य मेरा एक भेद है। षट् द्रव्य/ अरूपी द्रव्य/ अजीव द्रव्य

(f) मेरे द्वारा लगे हुए दोषों की आलोचना करके आत्मा को शुद्ध किया जाता है। प्रायश्चित्त

(g) मेरी बाह्य रूचि से आन्तरिक रूचि का ज्ञान होता है। लिंग

(h) मेरा स्वभाव संसार की उदासीनता है। निर्वेद

(i) मैं कठिन तपस्या करके धर्म की प्रभावना करता हूँ। तपस्वी प्रभावक

(j) सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मेरे उपाय हैं। मोक्ष

(k) मेरा एक भेद दिवस-चरिम है। अद्धा तप

(l) पाँचों महाव्रतों का पालन करना, मेरे पच्चक्खाण के भेद हैं। सर्व मूलगुण पच्चक्खाण

(m) मेरे कर्म के उदय से जीव में आहार संज्ञा उत्पन्न होती है। क्षुधा वेदनीय कर्म

(n) मेरा फल संयम है। पच्चक्खाण

(o) मैं वोदाण का फल हूँ। अक्रिया

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) भंग किसे कहते हैं ?

उ. विकल्प रचना को भंग कहते हैं। अथवा कोई भी व्रत-नियम, त्याग-प्रत्याख्यान जितने प्रकार के करण योगों से ग्रहण किया जाता है, उन प्रकारों को भंग कहते हैं।

(b) छेदोपस्थापनीय चारित्र कौनसे तीर्थंकर के शासनकाल में होता है ?

उ. छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासनकाल में होता है।

(c) श्रद्धान किसे कहते हैं ?

उ. तत्त्व श्रद्धा को जागृत करने तथा सुरक्षित रखने के उपायों को 'श्रद्धान' कहते हैं।

(d) मन शुद्धि किसे कहते हैं ?

उ. मन से वीतराग देव व सुगुरु का स्मरण, ध्यान और गुणगान करें, अन्य सरागी देव का नहीं करें।

(e) यतना किसे कहते हैं ?

उ. सम्यक्त्व रूप अनमोल धन को मिथ्यात्व रूप चोरों से सुरक्षित रखने के प्रयत्न को 'यतना' कहते हैं।

(f) उत्तरगुण पच्चक्खाण के प्रथम दो भेद लिखिए।

1. सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाण 2. देश उत्तरगुण पच्चक्खाण

(g) नारकी से आये हुए जीवों में कौन-कौनसी संज्ञा अधिक पाई जाती है ?

उ. नारकी से आये हुए जीवों में क्रोध और भय संज्ञा अधिक पायी जाती है।

(h) 'सवणे णाणे' थोकड़े का उल्लेख कहाँ पर किया गया है ?

उ. श्री भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पाँचवें उद्देशक में 'सवणे णाणे' थोकड़े का उल्लेख है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं तथा इसके प्रकारों का भी उल्लेख कीजिए।

उ. जिस शरीर में विविध अथवा विशेष प्रकार की क्रियाएँ होती हैं, उसे वैक्रिय शरीर कहते हैं। जैसे एक रूप होकर अनेक रूप धारण करना, छोटा-बड़ा शरीर बनाना, दृश्य-अदृश्य रूप बनाना आदि। वैक्रिय शरीर दो प्रकार का होता है-

1. भव प्रत्यय- देवों और नारकों में जन्म के साथ ही होता है।

2. लब्धि प्रत्यय- मनुष्य और तिर्यञ्चों को जप-तप आदि विशिष्ट साधना द्वारा लब्धि से प्राप्त होता है।

(b) अवधिज्ञान को परिभाषित करते हुए बताइये की यह कैसे होता है ?

उ. इन्द्रियों और मन की सहायता के बिना साक्षात् आत्मा से होने वाले रूपी पदार्थों के मर्यादित ज्ञान को 'अवधिज्ञान' कहते हैं।

यह ज्ञान देवों-नारकों में जन्म से ही तथा संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय व गर्भज मनुष्य में क्षयोपशम विशेष से होता है। अवधिज्ञान से मन की बात भी जानी जा सकती है।

(c) सकाम एवं अकाम निर्जरा को परिभाषित कीजिए।

उ. सकाम निर्जरा- सम्यक्त्व के सद्भाव में जो व्रत-नियम, त्याग, तप आदि किया जाता है, उनसे होने वाली कर्मों की निर्जरा को 'सकाम निर्जरा' कहते हैं। यह निर्जरा ही मुक्ति को प्राप्त कराने में सहायक बनती है।

अकाम निर्जरा- मिथ्यात्व और अज्ञान के सद्भाव में होने वाली कर्मों की निर्जरा को 'अकाम निर्जरा' कहते हैं। प्रत्येक जीव में बंधे हुए कर्म उदय में आकर आत्मा से अलग होते रहते हैं, उसे भी अकाम निर्जरा कहते हैं।

(d) ध्यान किसे कहते हैं ? इसके भेदों के नाम लिखिए।

उ. मन, वचन और काय को किसी एक विषय पर एकाग्र करना अथवा केन्द्रित करना 'ध्यान' कहलाता है।

किसी भी कार्य में जब स्थिर अध्यवसाय हो जाते हैं तो उसे भी 'ध्यान' कहते हैं।

अन्तर्मुहूर्त्त के लिए एक विषय के बारे में एकाग्र होकर चिंता निरोध करना 'ध्यान' कहलाता है।

नोटः- उपर्युक्त तीन में से कोई एक परिभाषा मान्य।

ध्यान के चार भेद हैं-1. आर्त्तध्यान, 2.रौद्रध्यान, 3. धर्मध्यान, 4. शुक्लध्यान।

(e) शुद्धि किसे कहते हैं ? काय शुद्धि का अर्थ भी लिखिए।

उ. विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को 'शुद्धि' कहते हैं।

काय शुद्धि- काय से श्री वीतराग देव व सुगुरु को वंदना-नमस्कार करें, अन्य सरागी देव को नहीं करें।

(f) अहो भगवन्! जीव संयत है, असंयत है या संयतासंयत है ? स्पष्ट कीजिए।

उ. समुच्चय जीवों में तीनों भेद हैं और मनुष्य में भी तीनों भेद हैं। तिर्यंच पंचेन्द्रिय में दो भेद हैं-असंयत और संयतासंयत। शेष 22 दण्डक में केवल असंयत ही हैं।

(g) संज्ञा की उत्पत्ति के अंतिम तीन कारण लिखिए।

उ. नोटः इनमें से किसी भी एक संज्ञा के कारण मान्य-

1. आहार संज्ञा- 1. क्षुधा-वेदनीय कर्म के उदय से, 2. आहार का चिन्तन करने से और 3. आहार के दृश्य देखने से।

2.भय संज्ञा- 1. भय मोहनीय कर्म के उदय से, 2. भय का चिन्तन करने से और 3. भय के दृश्य देखने से।

3. मैथुन संज्ञा- 1. वेद मोहनीय कर्म के उदय से, 2. मैथुन सम्बन्धी चिन्तन करने से और 3. मैथुन के दृश्य देखने से।

4.परिग्रह संज्ञा- 1. लोभ मोहनीय कर्म के उदय से, 2. परिग्रह का चिन्तन करने से और 3. परिग्रह के दृश्य देखने से।

(h) सवणे-णाणे प्रश्नोत्तर के आधार पर पर्युपासना, ज्ञान एवं विज्ञान का फल लिखिए।

उ. पर्युपासना से 'श्रवण' अर्थात् सम्यक् शास्त्रों का सुनना मिलता है।

ज्ञान का फल 'विज्ञान'(हेयोपादेय का विशेष ज्ञान) है।

विज्ञान का फल 'पच्चक्खाण' है।

कक्षा : प्रथम – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a) जूँ कहलाती है-

(क) पंचेन्द्रिय (ख) बेइन्द्रिय

(ग) तेइन्द्रिय (घ) चउरिन्द्रय (ग)

(b) गृहस्थ समाज के लिये आदर्श होते हैं-

(क) साधु (ख) श्रावक

(ग) श्रीमंत (घ) पंडित (क)

(c) जिन कारणों से आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है -

(क) पाप (ख) पुण्य

(ग) बंध (घ) आश्रव (घ)

(d) साधु के द्वारा स्त्री जाति का स्पर्श करने से कौनसे महाव्रत में दोष लगता है -

(क) परिग्रह (ख) अहिंसा

(ग) ब्रह्मचर्य (घ) अचौर्य (ग)

(e) छल-कपट आदि की चेष्टा होना, कौनसी संज्ञा है -

(क) परिग्रह (ख) लोभ

(ग) लोक (घ) माया (घ)

(f) अनाश्रव का फल है-

(क) तप (ख) वोदाण

(ग) संयम (घ) अक्रिया (क)

(g) मुष्टि आदि संकेतपूर्वक तप करना है-

(क) णिरवसेसं (ख) अइक्कंतं

(ग) संकेयं (घ) णियंटियं (ग)

(h) ''चार तीर्थ की सेवा करे'' बोल है-

(क) लक्षण (ख) भूषण

(ग) प्रभावना (घ) भावना (ख)

(i) ''तुषित'' भेद है-

(क) लौकान्तिक (ख) अनुत्तर विमान

(ग) वाणव्यंतर (घ) ग्रैवेयक (क)

(j) जीवास्तिकाय नहीं होता है -

(क) अरूपी (ख) शाश्वत

(ग) अशाश्वत (घ) गंधरहित (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) चारित्र आत्मा सभी संसारी जीवों में पाई जाती है। (नहीं)

(b) पुण्य का भोग करना साधना में बाधक नहीं है। (नहीं)

(c) सेवा का फल श्रवण होता है। (हाँ)

(d) कठिन तपस्या करके धर्म की प्रभावना करने वाला तपस्वी प्रभावक होता है। (हाँ)

(e) मनुष्य में सबसे कम आहार संज्ञा है। (नहीं)

(f) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सबसे कम मूल गुण पच्चक्खाणी होते हैं। (हाँ)

(g) समकित, धर्मरूपी आभूषणों की दुकान है। (नहीं)

(h) समिति और गुप्ति में उपयोगवान रहना संवर तत्त्व है। (हाँ)

(i) कर्म का संयोग होने से वियोग निश्चित है। (हाँ)

(j) सामान्य केवली की ऋद्धि दर्शन हेतु भी आहारक शरीर बनाया जाता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	अनुकंपा	(क) सुपच्चक्खाण	लक्षण
(b)	नीवी	(ख) पुद्गलास्तिकाय	अद्धा
(c)	संवृत	(ग) ग्रैवेयक	सुपच्चक्खाण
(d)	संलाप	(घ) मनुष्यायु	यतना
(e)	सुभद्र	(च) लक्षण	ग्रैवेयक
(f)	वृत्त	(छ) कापोत लेश्या	संस्थान
(g)	संख्यात प्रदेशी	(ज) यतना	पुद्गलास्तिकाय
(h)	अलसी के फूल	(झ) भय संज्ञा	कापोत लेश्या
(i)	विनम्रता	(य) अद्धा	मनुष्यायु
(j)	अधीरता	(र) संस्थान	भय संज्ञा

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं वेदनीय कर्म के उदय से पैदा होती हूँ।	आहार संज्ञा
(b)	मेरा बहुत आदर-सम्मान करें, मिथ्यादृष्टि का नहीं।	सम्यग्दृष्टि
(c)	मुझमें चारों प्रकार के आहार, धन-धान्य आदि का त्याग किया जाता है।	पौषध
(d)	मैं आत्मा को शुद्ध बनाने वाला ध्यान हूँ।	धर्मध्यान
(e)	मैं निर्जरा का प्रमुख कारण हूँ।	तप
(f)	मेरे भेद स्वभाव में ही परिणमन करते रहते हैं।	अरूपी अजीव
(g)	मैं सीधा मोक्ष मार्ग का कारण हूँ।	क्षपक श्रेणी
(h)	मैं वीतरागता में बाधक बनता हूँ।	चारित्र मोहनीय
(i)	मेरा फल संयम है।	पच्चक्खाण
(j)	रत्नावली, कनकावली आदि तपों का मुझमें समावेश है।	कोडिसहियं/ कोटि सहित तप

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 12x2=(24)

(a) तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अपेक्षा संयत, असंयत, संयतासंयत का अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सबसे थोड़े संयतासंयत, उनसे असंयत असंख्यात गुण।

(b) देवगति से आये हुए जीव में कौनसी संज्ञाएँ सबसे अधिक पाई जाती हैं ?

उ. देवगति से आये हुए जीव में लोभ और परिग्रह संज्ञा अधिक पायी जाती है।

(c) सभी संसारी व सिद्धों में पाई जाने वाली आत्माएँ कौन-कौनसी हैं ?

उ. द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा, दर्शन आत्मा।

(d) सच्चे मार्ग को संसार बढ़ाने वाला मानने से कौनसा मिथ्यात्व लगता है ?

उ. 'मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग श्रद्धने रूप 'मिथ्यात्व' कहलाता है।

(e) अपूर्वकरण गुणस्थान में पाई जाने वाली अपूर्व बातें कौन-कौनसी हैं ?

उ. पाँच बातें- 1. स्थिति घात, 2. रस घात, 3.गुण श्रेणि, 4. गुण संक्रमण और 5. अपूर्व स्थिति बंध।

(f) काय को परिभाषित कीजिए।

उ. शरीर के आधार पर जीवों में बनाये हुए समूह को 'काय' कहते हैं। विभिन्न प्रकार के पुद्गलों से बने शरीरों के द्वारा जीव के जो विभाग होते हैं उन्हें 'काय' कहते हैं।

(g) दूषण किसे कहते हैं ?

उ. श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों को दूषण कहते हैं।

(h) सवणे-णाणे का थोकड़ा कहाँ से लिया गया है ?

उ. भगवती सूत्र के दूसरे शतक के पाँचवें उद्देशक में से लिया गया है।

(i) परिहार-विशुद्धि चारित्र में गर्मी में कितना-कितना तप किया जाता है ?

उ. गर्मी में- जघन्य उपवास, मध्यम बेला व उत्कृष्ट तेला।

(j) 24वें बोल का 36वाँ भंग कौनसा है ?

उ. करूँ नहीं,अनुमोदूँ नहीं- वयसा कायसा।

(k) श्रोत्रेन्द्रिय के विकार लिखिए।

उ. श्रोत्रेन्द्रिय के विकार- ये तीन शुभ, 3 अशुभ, इन पर 6 पर राग और 6 पर द्वेष, इस प्रकार 12 विकार।

(l) मोहनीय कर्म किन-किन कारणों से बंधता है ?

उ. मिथ्यात्व एवं क्रोधादि कषायों के सेवन से मोहनीय कर्म बंधता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3 = (36)

(a) क्षेत्र की अपेक्षा अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान में अन्तर लिखिए।

उ. अवधिज्ञान का क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर सम्पूर्ण लोक प्रमाण है, जबकि मनःपर्यव ज्ञान का क्षेत्र मानुषोत्तर पर्वत तक ही है।

(b) 11वें गुणस्थान की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई तीन-

1. इस गुणस्थान को उपशम श्रेणि वाले जीव ही प्राप्त करते हैं।

2. इस गुणस्थान में काल करने वाला जीव अनुत्तर विमान में ही जाता है।

3. यदि काल नहीं करता तो स्थिति पूरी होने से नियमा नीचे गिरता है।

4. लौटकर जीव दसवें गुणस्थान में, नौवें गुणस्थान में यावत् कोई पहले गुणस्थान में भी आ सकता है।

5. कोई दूसरी बार भी उपशम श्रेणि कर सकता है, आगमानुसार उस भव में क्षपक श्रेणि नहीं कर सकता है।

(c) सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र को परिभाषित कीजिए।

उ. मूल गुणों का घात होने पर, अत्यधिक दोष लगने पर प्रायश्चित्त स्वरूप दीक्षा पर्याय में कमी करना अथवा नवीन दीक्षा देना (पुरानी दीक्षा पर्याय का छेदन करके)'सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र' कहलाता है।

(d) मैथुन संज्ञा के चार कारण लिखिए।

उ. 1. शरीर की पुष्टता से, 2. वेद मोहनीय कर्म के उदय से, 3. मैथुन सम्बन्धी चिन्तन करने से और 4. मैथुन के दृश्य देखने से।

(e) सर्व उत्तर गुण पच्चक्खाण के भेदों के नाम लिखिए।

उ. सर्व उत्तर गुण पच्चक्खाण के 10 भेद-1. अणागयं, 2. अइक्कंतं, 3. कोडीसहियं, 4. णियंटियं, 5. सागारं, 6. अणागारं, 7. परिमाणकडं, 8. णिरवसेसं, 9. संकेयं, 10. अद्धा।

(f) अप्रशस्त व प्रशस्त ध्यान को परिभाषित कीजिए।

उ. आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान दोनों कर्म-बंधन के हेतु और आत्मा को विषम भावरूपी विभावों में भटकाने वाले होने से 'अप्रशस्त ध्यान' कहलाते हैं।

धर्म और शुक्ल ध्यान स्वभाव दशा की ओर ले जाने में सहायक बनने के कारण 'प्रशस्त ध्यान' कहलाते हैं।

(g) वैक्रिय मिश्र काय योग किसे कहते हैं?

उ. नारकी, देवता के अपर्याप्त अवस्था में उत्पत्ति समय से लेकर जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण न हो तब तक के अन्तर्मुहूर्त्त काल की क्रिया को 'वैक्रिय मिश्र काय योग' कहते हैं। नारकी, देवता जब पर्याप्त अवस्था में उत्तर वैक्रिय करते हैं तब भी उनमें वैक्रिय मिश्र काययोग माना जाता है। मनुष्य, तिर्यञ्च में वैक्रिय लब्धि का प्रयोग करने पर वैक्रिय शरीर की शरीर पर्याप्ति जब तक पूर्ण न हो, तब तक के काल में होने वाली क्रिया को भी 'वैक्रिय मिश्र काययोग' कहते हैं।

(h) जीव, सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाणी है, देश उत्तरगुण पच्चक्खाणी हैं या अपच्चक्खाणी है ? स्पष्ट कीजिए।

उ. समुच्चय जीवों में तीनों भेद हैं। मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय में भी तीन-तीन भेद हैं। शेष 22 दण्डक में केवल अपच्चक्खाणी का एक ही भेद है।

(i) नारकी की क्षेत्र वेदना को लिखिए।

उ. यह स्थान सम्बन्धी वेदना हैं। नारकी के जीवों को 1. अनन्त भूख, 2. अनन्त प्यास, 3. अनन्त शीत, 4. अनन्त उष्ण, 5. अनन्त ज्वर, 6. अनन्त खुजली, 7. अनन्त रोग, 8. अनन्त अनाश्रय, 9. अनन्त शोक और 10. अनन्त भय, ये दस प्रकार की वेदना भोगनी पड़ती है।

(j) स्थानक के प्रथम तीन बोल लिखिए।

उ. 1. जीव चेतना लक्षण युक्त है। 2. जीव शाश्वत अर्थात् उत्पत्ति और विनाश रहित है।
3. जीव शुभाशुभ कर्मों का कर्त्ता है।

(k) परिहार विशुद्धि चारित्र ग्रहण करने की योग्यता लिखिए।

उ. जो साधु जघन्य नौ पूर्व की तीसरी आचार वस्तु के ज्ञाता हो, कम से कम 20 वर्षों की दीक्षा पर्याय हो तथा आयु 29 वर्ष से कम न हो, वे ही इस चारित्र का पालन कर सकते हैं। यह चारित्र तीर्थंकर प्रभु के पास अथवा जिसने परिहार विशुद्धि चारित्र की आराधना कर रखी है, उनके सान्निध्य में अंगीकार किया जा सकता है। यह चारित्र भरत, ऐरावत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासन काल में ही मिलता है।

(l) शुक्ल ध्यान का लक्षण लिखिए।

उ. मन के परिणामों की स्थिरता एवं योगों का निरोध करना 'शुक्ल ध्यान' कहलाता है। शुक्ल अर्थात् निर्मल आत्म-स्वरूप का, आत्मा की विविध पर्यायों का, पर्याय बनने के अन्तरंग बाह्य निमित्तों का एकाग्रचित्त होकर विचार करना तथा अपने आत्म-स्वरूप में लीन होना 'शुक्ल ध्यान' है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : प्रथम – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) उत्कृष्ट छह आवलिका की स्थिति वाला गुणस्थान है-

(क) मिथ्यात्व (ख) सास्वादन

(ग) निवृत्ति बादर (घ) सूक्ष्म संपराय (ख)

(b) पच्चक्खाण का फल है-

(क) ज्ञान (ख) अनास्रव

(ग) संयम (घ) सिद्धि (ग)

(c) मध्य के 22 तीर्थंकरों के समय यह चारित्र नहीं पाया जाता है -

(क) परिहार विशुद्धि (ख) सामायिक

(ग) यथाख्यात (घ) सूक्ष्म संपराय (क)

(d) ''मिथ्यादृष्टि को अनुकम्पावश दान देने का निषेध नहीं है''यह किसका भेद है -

(क) आगार (ख) लक्षण

(ग) यतना (घ) प्रभावना (ग)

(e) ''करुँ नहीं अनुमोदू नहीं-मनसा कायसा'' भंग है -

(क) 27वाँ (ख) 32वाँ

(ग) 38वाँ (घ) 35वाँ (घ)

(f) सुपच्चक्खाण का थोकड़ा भगवती सूत्र में से लिया है-

(क) शतक 2 उद्देशक 7 (ख) शतक 7 उद्देशक 2

(ग) शतक 1 उद्देशक 7 (घ) शतक 7 उद्देशक 1 (ख)

(g) तिर्यंच गति में सबसे कम संज्ञा होती है-

(क) आहार (ख) भय

(ग) मैथुन (घ) परिग्रह (घ)

(h) एक जीव में आत्म प्रदेशों की संख्या है-

(क) संख्यात (ख) असंख्यात

(ग) अनन्त (घ) एक (ख)

(i) अनाहारक अवस्था में पाया जाने वाला योग है-

(क) कार्मण (ख) ओदारिक मिश्र

(ग) वैक्रिय मिश्र (घ) वैक्रिय (क)

(j) समकित, धर्म रूपी प्रासाद की है -

(क) पेटी (ख) दरवाजा

(ग) दुकान (घ) नींव (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) महाविदेह क्षेत्र में परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं होता है। (हाँ)

(b) संलेखना सर्वउत्तर गुण रूप ही है। (नहीं)

(c) दृष्टान्तपूर्वक अन्यमतियों से वाद करके धर्म को दीपाने वाला धर्मकथा प्रभावक है। (नहीं)

(d) किन्नर परमाधामी देव है। (नहीं)

(e) स्व और पर का भेद-विज्ञान होना सम्यग्दृष्टि है। (हाँ)

(f) उपशांत मोहनीय गुणस्थान की स्थिति अन्तर्मुहूर्त नहीं है। (नहीं)

(g) 'परमाणु' पुद्गल का भेद है। (हाँ)

(h) संज्ञा का थोकड़ा भगवती सूत्र से लिया गया है। (नहीं)

(i) द्रव्य की अपेक्षा जीव अशाश्वत है। (नहीं)

(j) मोक्ष की तीव्र इच्छा 'संवेग' है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	वीरासन	(क) कृष्ण लेश्या	कायक्लेश
(b)	पृच्छना	(ख) जीवास्तिकाय	स्वाध्याय
(c)	निर्दयी	(ग) देशावगासिक व्रत	कृष्ण लेश्या
(d)	मायावी	(घ) उपभोग-परिभोग	नील लेश्या
(e)	चन्द्रमा की कला	(च) काल-द्रव्य	जीवास्तिकाय
(f)	14 नियम	(छ) सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाण	देशावगासिक व्रत
(g)	असंवृत	(ज) काय-क्लेश	दुपच्चक्खाण
(h)	वर्तन गुण	(झ) नील लेश्या	कालद्रव्य
(i)	सागारं	(य) दुपच्चक्खाण	सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाण
(j)	कर्मादान	(र) स्वाध्याय	उपभोग-परिभोग

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) मैं शरीर की पुष्टता के कारण पैदा होती हूँ। मैथुन संज्ञा

(b) मैं धर्म रूपी भोजन का थाल हूँ। समकित

(c) मेरी आराधना नौ मुनि एक साथ करते हैं। परिहार विशुद्धि चारित्र

(d) मेरा आकार सिंघाडे के सामान है। त्रिभुज संस्थान

(e) मैं बादलों की तरह मिलता व बिखरता हूँ। पुद्गल

(f) मेरा वर्ण हल्दी के टुकड़े व पटसन के फूल के सामान पीला होता है। पद्म लेश्या

(g) मेरी प्राप्ति घाति कर्मों के क्षय होने पर होती है। केवलज्ञान/केवल दर्शन /सयोगी केवली

(h) हम कर्मों का क्षय करके मोक्ष में जाते हैं। भव्य जीव

(i) मैं तीसरी नरक तक के जीवों को वेदना देता हूँ। परमाधामी देव

(j) मेरे द्वारा मात्र वर्तमान की ही जानकारी होती है। मतिज्ञान

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) पडिवाई को समझाइए।

उ. जिन जीवों ने एक बार सम्यक्त्व प्राप्त कर लिया है, किन्तु सम्यक्त्व का वमन कर देने से वर्तमान में मिथ्यात्व दशा में है।

(b) इत्वरिक सामायिक चारित्र का काल कितना होता है?

उ. जघन्य सात दिन, मध्यम 4 महिने व उत्कृष्ट 6 माह होता है।

(c) आस्रव तत्त्व की परिभाषा लिखिए।

उ. जिन कारणों से आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है, उन कारणों को आस्रव तत्त्व कहते हैं।

(d) अजीव राशि में स्पर्श के भेद बताइए।

उ. आठ स्पर्श के 184 भेद- कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष इन आठ स्पर्शों में प्रत्येक के 5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस, 6 स्पर्श और 5 संस्थान। इन 23 भेदों से गुणा करने पर 23X8=184 भेद हुए।

(e) 49 भंगों में से 37वाँ व 23वाँ भंग लिखिए।

उ. 37वाँ भंग- कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं- मनसा वयसा

23वाँ- करुँ नहीं, कराऊँ नहीं-वयसा

(f) प्रभावना को परिभाषित कीजिए।

उ. जैन धर्म की उन्नति एवं प्रचार के लिए प्रयत्न करना 'प्रभावना' है और जैन धर्म की उन्नति करने वाला प्रभावक कहलाता है।

(g) नियंटियं को समझाइए।

उ. णियंटियं- नियमित दिन में विध्न आने पर भी धारा हुआ तप अवश्य करें।

(h) मनुष्य गति से आये हुये जीव में संज्ञा किस क्रम से कम-अधिक पाई जाती है?

उ. भय, आहार, परिग्रह और मैथुन संज्ञा।

(I) वितिगिच्छा को परिभाषित कीजिए।

उ. धार्मिक क्रिया के विषय में फल के प्रति संदेह करना व गुणियों के मलिन वेष को देखकर घृणा करना 'वितिगिच्छा' है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 8x4=(32)

(a) नरक गति की अपेक्षा संज्ञा का अल्प बहुत्व लिखिए।

उ. नारकी में सबसे कम मैथुन संज्ञा वाले, उससे अधिक आहार संज्ञा वाले संख्यात गुणा, उनसे परिग्रह संज्ञा वाले संख्यात गुणा और उनसे भय संज्ञा वाले संख्यात गुणा।

(b) शुद्धि को परिभाषित कर उसके भेदों के नाम लिखिए।

उ. विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को शुद्धि कहते हैं। इसके तीन भेद है-

1. मनशुद्धि 2. वचन शुद्धि 3. काय-शुद्धि

(c) अद्धा तप किसे कहते हैं ? उसके भेदों के नाम लिखिए।

उ. अद्धा- काल का परिमाण कर तप करें। अद्धातप के 10 भेद हैं-1. नवकारसी, 2. पोरिसी, 3. दो पोरिसी,4. एकासन, 5. एकलठाणा, 6. आयम्बिल, 7. नीवि, 8. उपवास, 9. अभिग्रह और 10. दिवस-चरिम।

(d) लोक संज्ञा को समझाइए।

उ. लोक में रूढ़ किंतु अंधविश्वास, हिंसा, असत्य आदि के कारण हेय होने पर भी लोकरूढ़ि का अनुसरण करने की अभिलाषा होना। अथवा मतिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से संसार के सुन्दर, रूचिकर पदार्थों को विशेष रूप से जानने की अभिलाषा होना।

(e) **49 भंग में से अंक 21 के बनने वाले भंग लिखिए।**

उ. अंक 21 के भंग नौ। दो करण और एक योग से कहना-

1. करूँ नहीं, कराऊँ नहीं-मनसा, 2. करूँ नहीं, कराऊँ नहीं-वयसा,

3. करूँ नहीं, कराऊँ नहीं-कायसा, 4. करूँ नहीं,अनुमोदूँ नहीं-मनसा,

5. करूँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं-वयसा, 6. करूँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं-कायसा,

7. कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं-मनसा, 8. कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं-वयसा,

9. कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं- कायसा।

(f) **नौ लोकान्तिक तथा नवग्रैवेयक के नाम लिखिए।**

उ. 9 लोकान्तिक- 1. सारस्वत, 2. आदित्य, 3. वह्नि, 4. वरूण, 5. गर्दतोय,
6. तुषित, 7. अव्याबाध, 8. आग्नेय और 9. अरिष्ट।

9 ग्रैवेयक- 1. भद्र, 2. सुभद्र, 3. सुजात, 4. सुमनस,
5. सुदर्शन, 6. प्रियदर्शन, 7. आमोह, 8. सुप्रतिबद्ध और यशोधर।

(g) **विषय और विकार का अर्थ स्पष्ट करते हुए घ्राणेन्द्रिय के विकार लिखिए।**

उ. विषय- जो इन्द्रियाँ पुद्गल के जिन गुण-धर्म को ग्रहण करती हैं, वे उस इन्द्रिय के 'विषय' कहलाते हैं। अर्थात् इन्द्रियों के माध्यम से जीव जिन शब्द आदि को ग्रहण करता है उसे 'विषय' कहते हैं।

विकार- ग्रहण किये गये विषयों को अच्छा-बुरा मानकर उन पर राग-द्वेष करना 'विकार' कहलाता है।

घ्राणेन्द्रिय के 2 विषय- 1. सुरभिगंध 2. दुरभिगंध।

विकार- ये 2 सचित्त, 2 अचित्त और 2 मिश्र। इन 6 पर राग और 6 पर द्वेष। इस प्रकार 12 विकार।

(h) **उपशम श्रेणि किसे कहते हैं ?**

उ. दर्शन सप्तक के क्षय या उपशम करने के बाद मोहनीय कर्म की शेष 21 प्रकृतियों को दबाते हुए अर्थात् उपशमन करते हुए आगे के गुणस्थान में बढ़ना 'उपशम श्रेणि' है।